लक्ष्मीप्रदायक मोती शंख

आप ने लक्ष्मी के हाथ में स्थित एक शंख देखा होगा, यह देवी का सबसे महत्वपूर्ण आभूषण है। श्री यंत्र की साधना तो सभी करते हैं, लेकिन जो मोती शंख की साधना करता है और अपने कार्य स्थल, व्यापार स्थल, घर अथवा भंडार में मोती शंख स्थापित कर लें तो लक्ष्मी का वहाँ स्थायी निवास हो जाता है।

यद्यपि भारतवर्ष में दक्षिणावर्ती शंख का विशेष महत्व जन-साधारण में व्याप्त है, परंतु मोती शंख अप ने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण शंख है। इसकी चमक मोती के समान होने के कारण ही इसे मोती शंख कहा जाता है। यह एक गोल आकार का सुन्दर, सुरम्य शंख होता है जो कि अपने आप में कई विशेषताएं समेटे हुए है। यह शंख छोटे बड़े कई साइजों में उपलब्ध होता है, यह प्रकृति का वरदान है जो मनुष्यों को सहज ही प्राप्त है।

मोती शंख में यह विशेषता है कि इस पर प्रयोग करने से साधारण गृहस्थ को भी विशेष सफलता प्राप्त हो जाती है। वैसे तो मोती शंख के हजारों प्रयोग हैं, किन्तु नीचे कुछ महत्वपूर्ण प्रयोग दिये जा रहे हैं-

धार्मिक प्रयोग-

धार्मिक दृष्टि से भी इस शंख को लक्ष्मी का अत्यन्त प्रिय माना गया है, अतः जिसके घर में पूजा स्थान में यह शंख रहता है, उसके घर में निरंतर लक्ष्मी का वास बना रहता है।

► यदि प्रातःकाल स्नान करते समय इस शंख में से थोड़ा-सा जल लेकर वह बाल्टी से भरे हुए पानी में मिलाकर स्नान करें तो शरीर पुण्यवान और कान्तिमय होता है।

► यदि इस प्रकार के शंख को कारखाने में स्थापित किया जाए तो स्वतः ही उसकी दरिद्रता समाप्त हो जाती है, और आर्थिक उन्नति होने लगती है। इस शंख को विशेष रूप से दारिद्रय निवारक कहा जाता है और इसके रहने से उसके व्यापार में वृद्धि होती रहती है।

अनुष्ठान-

इस शंख पर कई प्रकार के अनुष्ठान सम्पन्न किये जाते हैं, पर मेरा मूलतः अनुभव है, कि लक्ष्मी प्राप्ति से सम्बन्धित तथा वशीकरण से सम्बन्धित अनुष्ठान इस पर पूर्ण सफल और प्रभावकारी होते हैं, मैं अपने दो अनुभूत प्रयोग नीचे स्पष्ट कर रहा हूँ-

1. वशीकरण प्रयोग

यदि घर में कलह हो या पति-पत्नी में मतभेद हो या पत्नी चाहती हो कि उसका पति उसके नियंत्रण में रहे या कोई व्यक्ति किसी अन्य को अपने वश में करना चाहता हो या किसी शत्रु को अपने अधीन करना चाहता हो तो ऐसे सभी प्रयोगों में नीचे लिखा प्रयोग उपयोगी हो सकता है।

यह प्रयोग किसी भी रविवार से प्रारम्भ किया जा सकता हैं, रविवार के दिन प्रातःकाल उठकर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने इस शंख को रख दे और इस पर कुंकुम आदि लगा दे, इसके बाद एक घृत का दीपक इसके सामने रखकर स्फटिक माला से निम्न मंत्र की एक माला फेरे। इस प्रकार तीस दिनों तक नित्य नियमपूर्वक करे तो निश्चय ही वह अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर लेता है, इस प्रकार के प्रयोग में नित्य मात्र दस से पन्द्रह मिनट लगते हैं, और ऐसा प्रयोग करने पर व्यक्ति मनोवांछित सफलता प्राप्त कर लेता है।

मंत्र : ऊँ क्रीं अमुकं मे वशमानाय स्वाहा।

यह मंत्र अपने आप में विशेष शक्ति समेटे हुए हैं, इसकी विधि यह है, कि शंख अपने सामने रख दे, और चावल के साबुत दाने अपने सामने किसी पात्र

में रख दे, इस बात का ध्यान रखे कि चावल के दाने खण्डित न हो।

इसके बाद उपरोक्त एक मंत्र पढ़कर एक दाना इस शंख के मुँह में डाल दें, इस प्रकार नित्य 108 दाने शंख के मुंह 108 बार मंत्र पढ़कर डाल दें।

मंत्र में जहां 'अमुकं' लिखा हुआ है, वहां उस पुरुष या स्त्री का नाम उच्चारण करें, जिसे वश में करना है, जब माला पूरी हो जाय, तब वह शंख वहां से उठाकर सुरक्षित स्थान पर रख दे, इस बात का ध्यान रखे, कि शंख में डाले हुए चावल के दाने गिरे नहीं।

दूसरे दिन भी इसी प्रकार 108 बार मंत्र पढ़कर चावल के दाने इसमें डालें, इस प्रकार जब 30 दिन तक प्रयोग कर ले तो वे चावल के दाने किसी सफेद कपड़े में बांध कर अपने सन्दूक में या किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें, ऐसा करने पर वह पुरुष या स्त्री प्रयोग करने वाले के वश में रहेगी और वह जैसा चाहता है, उसी प्रकार से कार्य सम्पन्न होगा।

जब उसे इस वशीकरण प्रयोग से मुक्ति देनी हो तब उस पोटली में से वे चावल के दाने निकाल कर किसी नदी, तालाब या पवित्र स्थान पर डाल देने से वह उस वशीकरण प्रभाव से मुक्त हो जाता है।

2. लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग-

यह शंख लक्ष्मी प्राप्ति, आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि आदि में भी विशेष रूप से सहायक है, कर्जा उतारने में तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं प्रभावयुक्त है। जो व्यक्ति इस प्रकार का प्रयोग चाहता है या अपने जीवन में पूर्ण आर्थिक उन्नति एवं व्यापार वृद्धि चाहता है, उसे यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

प्रयोग- किसी बुधवार को प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने इस शंख को रख दें और उस पर केसर से स्वस्तिक चिन्ह बना दें, इसके बाद निम्न मंत्र जप करें, मंत्र जप में "स्फटिक माला" का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

।। ॐ श्रीं ह्रीं दारिद्रय विनाशिन्ये धनधान्य समृद्धि देहि देहि नमः।।

Om Shreem Hreem Daridraya Vinashinaya Dhandhanya Samradhi dehe dehi Namah:।।

इस मंत्रोच्चारण के साथ एक-एक चावल इस शंख के मुँह में डालते रहें, इस बात का ध्यान रखें कि चावल टूटे हुए न हों, इस प्रकार नित्य एक माला जपें, यह प्रयोग भी 30 दिन का है, जो अपने आप में अचूक और प्रभाव युक्त है।

पहले दिन की माला समाप्त होने के बाद उसमें चावल पड़े रहने दें और दूसरे दिन पहले वाले चावलों को किसी अलग पात्र में सहेज कर रख दें। फिर उसी प्रकार पहले दिन की तरह मंत्र जप करते हुए उसमें एक-एक मंत्र के साथ एक-एक चावल के दाने डालते रहें। तीसरे दिन, फिर चौथे दिन इसी प्रकार यह क्रिया दोहराते रहें।

तीस दिन पर यह प्रयोग समाप्त होने के बाद में जो चावल पहले सहेज कर रखें हैं उन चावलों सहित इस शंख को सफेद कपड़े में बांधकर अपने घर में पूजा स्थान में रख दें या कारखाने, फैक्ट्री या व्यापारिक स्थल पर स्थापित कर दें, यह शंख साधक के पास जब तक रहेगा, तब तक उसके जीवन में आर्थिक अभाव नहीं होगा तथा निरंतर आर्थिक व्यापारिक उन्नति होती रहेगी। यह भी स्पष्ट है कि ऐसा प्रयोग करने पर शीघ्र ही व्यक्ति कर्जे से मुक्ति पा लेता है, और सभी दृष्टियों से उन्नति करता है।

यदि मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त मोती शंख अपने पूजा स्थान में स्थापित किया जाये तथा उसमें जल भरकर लक्ष्मी के चित्र या विग्रह पर चढ़ाया जाये तो लक्ष्मी प्रसन्न होती है और आर्थिक उन्नति होती रहती है।

मोती शंख को घर में स्थापित कर दें और नित्य "ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः" 11 बार बोलकर एक-एक चावल का दाना शंख में भरते रहें। इस प्रकार 108 दाने इस शंख में डाले और इस प्रकार 11 दिन तक प्रयोग करें। यह प्रयोग करने से जन्म-जन्म की दरिद्रता समाप्त हो जाती है।

यदि मोती शंख दुकान के गल्ले में रखा जाये तो इससे बेतहाशा वृद्धि होती है।

यदि बुधवार के दिन किसी गिलास में पानी भरकर उसमें यह शंख रख दें और एक घंटे बाद ऐसा जल रोगी पर छिड़कें तो उसका रोग समाप्त होने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

यह एक अचूक प्रयोग है। मोती शंख को चावलों से भरकर लाल कपड़ें में बांध लें और यह पोटली घर में किसी स्थान पर रख दें तो लक्ष्मी प्राप्ति स्वतः होने लगती है। जब तक वह पोटली घर में रहेगी निरन्तर उन्नति होती रहेगी।

वस्तुतः यह शंख अत्यधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ एवं प्रभावयुक्त है तथा ऐसे बिरले ही सौभाग्यशाली होंगे, जिनके घर में इस प्रकार का दुर्लभ महत्वपूर्ण शंख पाया जाता होगा, पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इस प्रकार का शंख तभी सफलता देने वाला हो सकता है जब वह प्राण संजीवनी क्रिया से युक्त मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त हो। वस्तुतः यह शंख प्रत्येक गृहस्थ के लिए उपयोगी है।

प्रति मोतीशंख न्यौछावर- 550/- रु.

♦♦♦

आश्चर्यजनक लक्ष्मी प्राप्त करने के लिए चौतीसा यंत्र की अंगूठी

यंत्र पहिर चौतीसा। धन, सुख, भाग अनीसा।।

अर्थात्- जो अपनी अंगुली में चौतीसा यंत्र की अंगूठी बनवाकर धारण कर लेता है, वह आश्चर्यजनक रुप से लक्ष्मी प्राप्त करने लगता है, जिस प्रकार का भी भोग वह चाहता है, वह भोग सुख, ऐश्वर्य उसे अनायास ही प्राप्त होने लगता हैं। इस अंगूठी की विशेषता है कि इसके धारण करने से आर्थिक दृष्टि से निरन्तर उन्नति होती रहती है, चारों तरफ का वातावरण कुछ ऐसा बन जाता है कि उसके आर्थिक स्त्रोत चारों तरफ से खुल जाते है, अच्छे व्यक्तियों से परिचय और संपर्क बनता है और उनके माध्यम से ही जीवन में भोग एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होने लगती है। गुरु गोरखनाथ के अनुसार चौतीसा यंत्र और बीसा यंत्र का एक सा प्रभाव है और दोनों ही कलयुग में अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसे बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में पहना जाना चाहिए।

यदि कहीं पर रुपया फँसा हुआ हो या निकल न रहा हो तो इसके पहनने से कार्य सम्पन्न होने लगता है। इस अंगूठी की यह विशेषता है कि यदि व्यक्ति पर कर्जा हो तो शीर्घ ही उतर जाता है, व्यापार नहीं चल रहा हो तो इसके पहनने से व्यापार बढ़ने लगता है, नया व्यापार शुरु होने लगता है, रुके हुए व्यापार में तेजी आने लगती है, व्यापार में आय अधिक होने लगती है। एक प्रकार से देखा जाये तो घर में धन की वर्षा होने लगती है। वास्तव में यह अंगूठी कलियुग में कल्पवृक्ष के समान हैं।

आप लक्ष्मी के दास नहीं, लक्ष्मीवान् बनिये।
लक्ष्मी प्राप्त करना आपका भी अधिकार है।

न्यौछावर राशि चौतीसा यंत्र पैंडल- 1500 रुपये।
चौतीसा यंत्र अंगूठी 2100 रुपये।